

या मछली पकड़ना असंभव हो जाता है। बड़ी झीलों में तो यह मगरमच्छों को आश्रय प्रदान करती है और लोगों के लिए वहां से पानी लेना भी खतरे से खाली नहीं रह जाता।

जलकुंभी से जुड़ी एक समस्या यह भी है यह पानी में से ऑक्सीजन सोखती है और पानी की अम्लीयता में इज़ाफा करती है। इसके अलावा बहते पानी के स्रोतों का बहाव धीमा पड़ जाता है और अधिक गाद जमा होने लगती है। कुल मिलाकर इकॉलॉजी के लिए संकट पैदा हो जाता है। यदि हम अपने शहरों की झीलों को देखें तो यह संकट साफ नज़र आता है।

पानी में से जलकुंभी को हटाने की कोशिशें प्रायः नाकाम रहती हैं क्योंकि इसकी वृद्धि बहुत तेज़ है। इसके अलावा यह काम बहुत महंगा भी होता है। मसलन बताते हैं कि नाइज़ीरिया ने अपनी झीलों से जलकुंभी की सफाई पर

17.5 लाख डॉलर खर्च किए हैं और नतीजा ढाक के तीन पात रहा है। कुछ जगहों पर रसायनों का सहारा भी लिया गया मगर वहां पानी बहुत प्रदूषित हो गया।

अलबत्ता, जलकुंभी के इस संकट से निपटने में कुछ गुबरैले (बीटल्स) हमारा साथ दे सकते हैं। नियोचेटिना आइकॉर्निए और नियोचेटिना ब्रुची ऐसे दो गुबरैले हैं जो जलकुंभी को खाते हैं। ये और कुछ नहीं खाते। यदि जलकुंभी के 'बगीचे' में इन्हें छोड़ दिया जाए तो ये 90 फीसदी तक जलकुंभी चट कर जाते हैं। इनका उपयोग सबसे पहले सूडान में किया गया था मगर अब पूरे अफ्रीका में इन्हें तैनात कर दिया गया है। इस जैविक नियंत्रण के परिणाम आशाजनक रहे हैं। जलकुंभी पर नियंत्रण के बाद एक बार फिर मछली पकड़ना व नाव चलाना संभव हो गया है।  
(स्रोत विशेष फीचर्स)

## खरपतवार नाशक रोबोट

रोबोट खरपतवार को ढूँढ-ढूँढकर उन पर थोड़ी-थोड़ी दवा छिड़कता जाता है। देखा गया कि इस तरह से चुन-चुनकर खरपतवार नाशक का छिड़काव करने से भी रसायन के उपयोग में 70 प्रतिशत कमी आई।

जल्दी ही डेनमार्क के खेतों में निंदाई का काम रोबोट को सौंप दिया जाएगा। डैनिश इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर साइंस के स्पेण्ड क्रिस्टेंसन द्वारा विकसित यह रोबोट चुन-चुनकर निंदाई करेगा। वैसे फिलहाल क्रिस्टेंसन द्वारा विकसित खरपतवार नाशी रोबोट निंदाई का काम नहीं करता है बल्कि खरपतवार की स्थिति का पता देता है ताकि रसायनों का छिड़काव कम करना पड़े। अगला मॉडल यह होगा कि रोबोट खरपतवार को ढूँढ-ढूँढकर उन पर थोड़ी-थोड़ी दवा छिड़कता जाएगा। मगर क्रिस्टेंसन के दिमाग में लक्ष्य एक ऐसे रोबोट का है जो खरपतवारों को पहचाने और उखाड़ फेंके।

वैसे खरपतवार को खत्म करने वाले रोबोट यू.एस. में काम भी करने लगे हैं। मगर ये थोड़े अलग हैं। इनका काम तो रास्ते में आने वाले हर पौधे को उखाड़ फेंकना है। इनका उपयोग हवाई पट्टियों, रेलवे लाइनों और

सड़कों के आसपास के पौधे साफ करने में किया जाता है। क्रिस्टेंसन खेती में उपयोगी रोबोट बनाना चाहते हैं। इस रोबोट को फसल और खरपतवार के बीच भेद करना होगा। उनका रोबोट एक चार पहिए की गाड़ी है जो बैटरी से चलती है। इसमें एक कैमरा लगा है। यह सामने आने वाली हर चीज़ को पहचानने का काम करता है। इसकी याददाश्त में कई खरपतवारों के चित्र हैं। इन चित्रों में खरपतवार की पत्तियों की बनावट, तने पर उनकी जमावट तथा अन्य जानकारी का समावेश है। ऐसी कई खरपतवारों की सूचना इसकी याददाश्त में है। इसके अलावा अभी डेनमार्क में पाई जाने वाली 40 और खरपतवारों की जानकारी इसमें डाली जाएगी। क्रिस्टेंसन का कहना है कि दो-बीजपत्री चौड़ी पत्ती वाली खरपतवार की जानकारी संग्रहित करना आसान है। समस्या एक-बीजपत्री घासनुमा खरपतवारों में आती है। ये खरपतवारें